Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.lbp.world

"२१ वी सदी के प्रथम दशक का उपन्यास साहित्य"

प्रा.डॉ. जिभाऊ शा. मोरे
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, के.जे.सोमैया महाविद्यालय, कोपरगाव (जि.नगर).

'उपन्यास' मानव-जीवन का सघन और प्रामाणिक चित्रण करके ही अपने अस्तित्व को सार्थक करता है| जहाँ तक हिंदी-उपन्यास साहित्य का सवाल है, स.१८८२ इ.के 'परीक्षा गुरु' (लाला श्रीनिवासदास) से यह यात्रा शुरू हुई और लगबग सवा सौ वर्षो के बाद कई उतार-चढाव पार करते हुए आज साहित्य की केंद्रिय विधा बन गया है| "हमारा उपन्यास अब काल्पनिक आदर्श के युग से बहुत आगे निकल चुका है|"[1] बीसवी सदी के प्रथम दशक में हिंदी उपन्यास ने पूरी शिद्दत और सामर्थ्य के साथ अपना विस्तार किया है | इस दौर के उपन्यास साहित्य ने सामाजिक विद्रुपताओं और तत्संबद्ध जटिलताओं का सूक्ष्म विश्लेषण करने का सफल प्रयास किया है| इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में आए उपन्यासों की एक लंबी सूची अनेक सामाजिक मुद्दों पर गहरे विमर्श का आवाहन करती है| जैसे-कितने पाकिस्तान आवां 'गीलिगड्डू', 'शेष कादंबरी', 'और कोई बात नहीं', 'रेत', 'कथा सतीसर', 'कलिकथा वाया बाईपास', 'सात फेरे', 'दुक्खम-सुक्खम', 'छुट्टी के दिन का कोरस', 'मेरा निर्णय', 'आखिरीछलांग', 'देश निकाला', 'पानी बिच मीन पियासी', 'बेनी माधो तिवारी की पतोह', 'मैने नाता तोडा', 'वेअर इू आई बिलाँग', 'रेखाएँ दुख की अन्नदाता', 'नया जन्म', 'आखेट', 'विश्वामित्र', 'वर:मिहिर', 'लालचन असुर', 'ग्लोबल गाँव के देवता', 'गोमुत्र', 'टूटने के बाद', 'संभाजी', 'धर्मयुद्ध', 'सामने का आसमान', 'ए.बी.सी.डी'., 'आधी रात की संताने', 'आज बाजार बंद है', 'अगनपाखी', 'विजन', 'बाजत अनहद ढोल', 'अवसर सर्वोत्तम सच', 'आग का गुलाब', 'देशद्रोही', 'एक और विभाजन', 'और यात्राएँ', 'पासंग', 'आयोग', 'न भूतो न भविष्यति', 'देह गाथा माधवी की', 'जंगल के जुगनू' 'कैसी आगी....', 'हसिना मंजिल', 'सल्तनत को', 'सुनो गाँववालों' आदि जैसी काफी लंबी तालिका प्रस्तुत की जा सकती है| पिछडे आदिवासी और अपरिचित समाज के साथ-साथ समाज को तोडनेवाली ताकतो से टक्कर लेने के साथ ही समाजिक सौहार्द के गहन विमर्श में भी अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करा रहा है| उपरयुक्त लंबी सूची इसी हस्तक्षेप का उदाहरण है| एक विचारणीय बात यह है कि ये सभी उपन्यास बौध्दिक विमर्श के साथ-साथ सामाजिक संरचना से उद्भुत कई समस्याओं को उजागर करते हैं| आलोच्य युग के उपन्यास-साहित्य में गाँव तथा नगरों के अतिरिक्त पहाड, जंगल, आदिवासी, अल्प संख्यांक तथा अन्य उपेक्षित समुदायों को

छुते हुए उनसे संबध्द अनेक अनछुए पक्षों को भी उजागर किया है| यहाँ इन सभी उपन्यासों पर स्वतंत्र रूप से विवेचन-विश्लेषण असंभव है| अत: कुछ चुनींदा चयनित रचनाओं पर दृष्टिक्षेप डालना चाहूंगा|

२१ वी सदी अर्थात इस नई सहस्त्राब्दी में स्त्री-विमर्श और दलित-विमर्श सर्वाधिक चर्चित विमर्श है| इन दो विमर्शों के अलावा भूमंडलीकरण, बाजारवाद, सांप्रदायिकता, ग्रामीण-आदिवासी जैसे अन्य विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में विरचित प्रमुख और चर्चित उपन्यासों, जैसे, 'कलिकथा : वाया बाईपास', 'विजन' 'दुक्खम-सुक्खम' 'दौड', 'आज बाजार बंद है', 'छप्पर', 'बेनी माधो तिवारी की पतोह' का प्रमुख स्थान है| इनमें से 'विजन' तथा 'दुक्खम-सुक्खम' उपन्योंसे में स्त्री-विमर्श के विभिन्न रुपों का मार्मिक अंकन हुआ है| 'विजन' में स्त्री के शोषण, संघर्ष और साहस की कथा कही गयी है| कथानायिका 'नेहा' के माध्यम से लेखिका मैत्रियी पुष्पा ने गरीब परिवार से पढ-लिखकर बुद्धिमान डॉक्टर बनी एक मध्यमवर्गीय युवती की करुण कहानी प्रस्तुत की है| मैत्रेयी के उपन्योसों के नारी पात्र केवल लडने के लिए अपने विरोधियों से नही लडते, बल्कि स्त्री द्वारा खुद अपनी अस्मिता की तलाश करना तथा समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करना ही उनका उद्देश्य होता है|

प्रसिद्ध यथार्थवादी उपन्यासकार स्व. कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' भारत-पाकिस्तान के विभाजन को आधार बनाकर लिखा गया एक श्रेष्ठ उपन्यास है| इस उपन्यास में समूचे मानव-इतिहास को स्पर्श करते हुए लेखक ने उन सभी घटनाओं को याद किया है, जब सहज मानवीय चेतना में फाँक पैदा की करने की कोशिश की जाती है| वर्तमान राजनीति मनुष्य को मनुष्य से केवल तोडने का काम करती है| उपन्यास के केंद्रीय पात्र 'हम' की चिंताएँ सहज मानवीय चिंताएँ है, जिनमे प्रेम एक मानवीय मूल्य के रूप में सर्वोपरि है| 'कलि-कथा : वाया बाईपास' इस दशक का अत्यंत चर्चित उपन्यास है| लेखिका अलका सरावगी ने न केवल मारवाडियों के निजी जीवन का खाका प्रस्तुत किया है, बल्कि आजादी के बाद उपस्थित अनेकानेक समस्याओं का निदान ढूंढने का कारण कैसे हम 'बाईपास' तलाशते रहे और देश की समस्याओं को अनदेखा करते रहे; इसका बखूबी चित्रण किया है| जो आज के युगधर्म की ओर दिशा-निर्देश करता है, कि कैसे हम मूल समस्याओं से बचकर बगल के सुविधाजनक रास्ते से निकल पडते हैं|

'कथा-सतीसर' लेखिका चंद्रकांता का आकार, विचार, विस्तार, विषय तथा कला की दृष्टि से एक बृहद उपन्यास है| यह उपन्यास स. १९३१ से लेकर स. २००० तक की त्रासद घटनाओं एवं लगातार निर्वासन का दर्द झेलनेवाले काश्मिरियों की करूण कथा है| भारत का स्वर्ग कही जानेवाली कश्मीर रूपी धरती पर लहू–लुहान जिंदगी जीने को बाध्य आम आदमी की त्रासदी है यह उपन्यास| विगत सत्तर वर्षों में कामीर की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका यथार्थ अंकन 'कथा-सतीसर' में हुआ है| संक्षेप में कश्मीरी पंडितो का विस्थापित होना, आतंकवाद, नारी शोषण , गंदी राजनीति जैसे अनगिनत ज्वलंत प्रश्नो की पडताल करता यह एक सार्थक उपन्यास है| सदी के एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार संजीव का 'सूत्रधार' भोजपुरी भाषा के लोक-कलाकार भिखारी ठाकुर के जीवन पर आधारित है| चरित्रप्रधान होकर भी छपरा (बिहार) की स्थानीय बोली, रीति–रिवाज, गाली, मुहावरे, परिवेश तथा खास टोन के समन्वय से 'सूत्रधार' अधिक विश्वसनीय और जीवंत जान पडता है| इसतरह एक ओर यह उपन्यास भोजपुरी के बादशाह भिखारी के जीवन–संघर्ष की कथा कहता है, वही दूसरी और भारतीय गाँवो की जटिलताओं को भी उजागर करता है|

इसी तरह असगर वजाहत का 'कैसी आगी लगाई', अलका सरावगी का 'कोई बात नहीं' मंजूर एहतेशाम का 'बशारते मंजिल' मोहनदास नैमिशराय का 'आज बाजार बंद है' इस दशक के प्रमुख चर्चित उपन्यास है| "असगर वजाहत का उपन्यास 'बरखा रचाई' मे व्यक्ति की अपनी निजी जीवन संबंधी समस्याओं के साथ-साथ आधुनिक युग की समस्याओं, समाज एवं मानसिक परिस्थितीयोंका चित्रण भी किया गया है|"[2] इन्हें आधार बनाकर हिंदी उपन्यास के भविष्य की पहचान की जा सकती है| इन्हें देखकर नही लगता कि उपन्यास या फिर विचारधारा का अंत होने जा रहा है| कैसी भी हताशा से अधिक यह संभावनाओं की शुरुआत है|

संदर्भ-

1. डॉ. ऋषभदेव शर्मा, इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास : विविध विमर्श, (भूमिका से)
2. जमुना सुखाम, इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिंदी उपन्यासों में 'व्यक्ति के मानसिक तनाव, उलझने और समाज